International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 12, Issue 10, October 2025
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# बन कन्या

**पर्यवेक्षक**
**डॉ अनीता सिंह.**
**हिंदी विभाग.**
**असिस्टेंट प्रोफेसर.**
**जे एस विश्वविद्यालय**
**शिकोहाबाद फिरोजाबाद**

**शोधार्थी**
**शशिपाल सिंह बघेल**
**जे एस विश्वविद्यालय**
**शिकोहाबाद,फिरोजाबाद**

## सार

"वन कन्या" एक प्रतीकात्मक शब्द है जो भारतीय संस्कृति, साहित्य और पर्यावरणीय विमर्श में अनेक अर्थों और भावनाओं को समेटे हुए है। यह शब्द न केवल एक स्त्री पात्र को दर्शाता है जो जंगलों में रहती है, बल्कि यह प्रकृति, पवित्रता, स्वतंत्रता और स्त्री सशक्तिकरण का भी प्रतीक बन गया है। रामायण की शबरी, महाभारत की हिडिम्बा या फिर आधुनिक साहित्य की ‘वन कन्या’ — सभी पात्रों ने अपने-अपने समय में सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती दी है।

## बन कन्या

बूंद और समुन्द्र उपन्यास में अमृत लाल नागर ने विदुषी बन कन्या के प्रेम प्रसंग और आजीविका सम्बन्धी प्रश्नों के स्वर दिखाई देते है। क्यों कि वन कन्या में बौद्धिमकता है तथा और जागरूकता भी दिखाई पड़ती है यह एक पढ़ी लिखी नारी है। तभी परिवार के सभी व्यक्तियो से संघर्ष करती है। उसकी एक भाभी विधवा है। वह विधवा होने का माथे पर कलंक है। इसलिए वह समाज में जीना नहीं चाहती हैं बल्कि जल मरने के प्रसंग से ही दुख से भर जाती है। और इस घटना को यह सामाजिक अनाचार के रूप में देखती हुई नारी की अधोगति का कारण उसकी आर्थिक परिस्थितियो को मानती है। क्योकि समाज में विधवा होना एक बहुत बडा

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अभिशाप है। उसका कहीं कोई सम्मान नहीं होता है। उसकी तरफ सभी अच्छे बुरे लोग गलत नजरिया से देखते है। कुछ कवियों ने कहा है - कि

रोड रढापो जवं काटे, जव रहुआ काटन दें।
जो कहूँ मिल जाय गेलघाट पै, घर तक जानन दे।
भाभी भाभी कहें पजारो गोदी में मोय बैठन दें
रंग रंगीली चूंदर ओढे मोकू मेला देखन दे।

घर से निकल जाने पर भी वह बहुत ही संयम व नियम से रहती है। जिससे कोई कुछ न कह दें एक जगह कहीं स्थान मिल जाने पर उसकी आजीविका की समस्या का समाधान भी हो जाता है वह उसी स्थान पर खाती है, और कमाती है परन्तु फिर वह वासनात्मक और अच्छे प्रेम को शारीरिक शौक का पर्याय मानती है जबकि प्रेम भरी वासनात्मक है। प्रेम की एक सफलतात्मक कुन्जी है। जिससे हर मनुष्य उसे पढना चाहता है। इसके बिना भी नारियो का जीवन भी अधूरा है। उसकी दृष्टि में प्रेम का एक मात्र गुण एक निष्ठा होता है।

जब कि परिवार को चलाने के लिए पति पत्नी कि बीच प्रेम सम्बन्ध घनिष्ठ होना चाहिए हो भी जाय परन्तु इन दोनो के बीच किसी तीसरे व्यक्ति को वह घृणा की दृष्टि से देखती हैं। प्रेम को मार्ग अवरूद्ध हो जाता है। वह अपने आपको घोर नैतिकता के बन्धन में बांध देती है। अगर परिवार को बन्धन में न वांधा जाय तो परिवार के सभी लोग अलग अलग बिखर जाते है। क्योकि घर के गंदे वातावरण से घर का पूरा सिस्टम खराब हो जाता है। वन कन्या का भाई भी बुद्धि का हीन था। उसके दिमागी असन्तुलन से उसे शिक्षा मिली थी। परिवार का कलुषित वातावरण था। जिससे पिता की काम वृन्तिया और० चाची की चरित्र हीनता को देखकर स्वयं अपने प्रति लोगो की ललचाई आँखे देखकर उसे प्यार करने की लालसा बड़ जाती है। इस देश में नारियों के प्रति अनेक आदेश पुरुषो द्वारा काम वृति का मन विकार समझने के अनेक उपदेश देने होते है। फिर भी दवे पाव चौरी छिपे निरन्तर प्रयास करते रहते है। जबकि तीसरे व्यक्तियो को मालूम हो जाने पर ऐसी नारियो के आगे पीछे खीच कर हैरान किया करते थे क्योकि हर पुरुष का काम इच्छाए पूरी नही की जा सकती थी कुछ तो मन ही मन काम वासना को सहन करते रहते है। परन्तु दोनो ही। स्त्री पुरुष साथ-साथ रहकर एक दूसरे से उलझती थी। भावी समाज के आभिशाप से उसकी जीवित रहना भावज के दृष्टान्त से उसे पुरूष से घृणा होती है उसे

समाज जाकर जलील करता है उसकी इज्जत को तार-तार कर देता है। ऐसे मनुष्य के कभी नारी नही बैठती है। उसने निश्चय कर लिया थ। कि यदि उसे अपनी ही तरह संस्कारी के तरह सिद्धान्त वादी पुरूष मिल गया तो वह विवाह कर लेगी यही बात कन्या को पसंन्द है। उससे कोई अच्छा पुरूष मिल जाये तो अपना जीवन अच्छी तरह  व्यतीत कर सकती है। जब कि सज्जन से प्यार करती है सज्जन उसके आदेश की इस कसोटी पर पूरा खरा नहीं उतर पाता था। इसीलिए उसका प्रेम समस्या के रूप में विकसित होता है वह यौन सम्बन्धी बातो पर बल देती है वन कन्या उसे ही सामाजिक दायित्य का आधार मानती है।

बताया जाता है कि स्त्री पुरुष दोनो ही मिलकर एक घर बनाते है जो सम्पूर्ण जीवन का मुख्य आधार है।

क्यो कि इस घर में रखकर प्रत्येक का कार्य पूर्ण होता है सच है कन्या के विचार से स्त्री-पुरूष मिलकर ही एक नया समाज बनाते है। क्यो कि उन पर पैदा होने वाली सन्तान अपनी जिन्दगियो कि जिम्मेदारी होती है कि इन बच्चो का पालन पोषण करना शिक्षा समन्धी साधनो का सुलभ करना पूर्ण जिम्मेदारी निभानी पड़ती है और यौन सम्बन्धी बातो की तृप्ति की भावना मातृव में ही दूडंती है। कन्या भी सज्जन से यही चाहती है। कि उसका भी एक छोटा सा परिवार बने और उसका पालन पोषण करने की जिम्मेदारी होनी चाहिए। परन्तु यही सज्जन और कन्या में मौलिक सिद्धान्तो मे भेद दिखाई देता है। सज्जन इस बात को स्वीकार करता है कि वह स्वयं किसी हद तक बिलासी पुरूष है। परन्तु यदि कन्या चाहे तो उससे विवाह करके उसे सुधार सकती है। पर वन कन्या को सज्जन के बीते हुए इतिहास पर भरोसा नही बन पाता है। उसका मन ढामा ढौल है। कही फिसल न जाये यह उसे डर खाये जा रहा है मेरा जीवन कही बर्बाद न हो जाये, लेकिन उसके वर्तमान और भविष्य पर आस्था या विस्वास प्रकट करनी होगी। तभी ठीक ठाक हो सकती है अन्यथा नहीं।

वन कन्या अपनी दुर्बल भावनाओ के प्रति भी सजग रहती है। वह इस बात को जानती है कि में सज्जन को छोड़ नही सकती हूँ। इसका अर्थ यह है कि मानो अपने चिर कोमार्य को चिर वैधव्य में या विवाह में परिणत करना स्वाभाविक होता है वन कन्या उसके परिवारो में फैली दुराचारो की कहानियो की अच्छी प्रकार से जानती है। वह स्वयं अपने घर को दुराचारों का अड्डा मानती है। अपने में ही नहीं बल्कि अन्य घरो में भी अईयासी का अड्डा बना हुआ

था। जैसे महिपाल सज्जन सबके घरो में वही अनाचार व दुराचार देखती है। परन्तु यह भी जानती है। कि सभी घर कुलीनों और आवरूदारों के माने जाते है। जबकि स्थिति पति-पत्नी में सद् भावना होनी चाहिए। और दोनो की एक दूसरे के प्रति अनुशासन की भावना होनी चाहिए, तभी घर को बांधा जा सकता है। अतः वन कन्या सज्जन से विवाह करने को राजी भी हो जाती है। परन्तु सज्जन के धन वैभव के कारण तू मुझसे शादी करेगी, ये बात वन कन्या सुन लेती है। तो उसका हृदय घृणा से भर जाता है सज्जन की बात सुनकर कन्या का मन आहत से भर जाता है।

और आत्म सम्मान को बहुत बड़ी ठेस पहुँचती है। वन कन्या सज्जन को चाहती हुई भी ना नहीं करती है। कहती है कि में अपने जीवन में नौकरी कर सकती हूँ, मजदूरी कर सकती हूँ, पर में इसके पास नहीं जाना चाहती हूँ। स्वयं अपनी, अपनी रोजी अपने आप कमा सकती हूँ। उसे केवल प्रेम चाहिए केवल सज्जन उसकी धन दौलत नही चाहिए। वन कन्या की आन्तरिक भावना उसका सतीत्व उसके चेहरे पर झलकती है। चित्रा राजदान और डा० शीला स्विंग दोनो ही उसे हसरत भरी नजरो से देखती है। आस्था अथवा डा० शीला एक विधवा नारी है। जो महिपाल से प्रेम करती है। उसे अपना हम सफर बना कर अपने साथ रखना चाहती है। जबकि महिपाल के पास गृहस्ती है, छोटे छोटे बच्चे भी है। उनकी देखभाल करनी चाहिए महिपाल सारी सारी रात डा० शीला के घर में पड़ा रहता है उसे अपने घर की चिन्ता नही रहती है।

जब कि सज्जन का प्रेम एक निष्ट नही है। वह भी अन्य स्त्रियो से प्रेम करता है, यह जानते हुए भी वह उदास सज्जन की बाहों का सहारा देती है। महज इसलिए कि वह सज्जन से ही प्यार करती है। प्यार से ही वह बिगड़ गया, पर वन कन्या सज्जन की बिगड़ी और विदकी हुई आत्मा को काबू में ला सकती है और वह विवाह कर लेती है वह सज्जन का विवाह सूत्र में बाँधकर एक अच्छी राह पर ले आती है। यही नहीं विशाल मानवता में या इतने बड़े समुद्र में बूंदे के महत्व को समझकर अपनी सारी सम्पदा भी दान कर देती है वन कन्या की प्रमुख समस्या भी यौन सम्बन्धी जिसके कारण वह बड़ी व्याकुल रहती थी जिनके नैतिक मान्यताओं के कारण उद्द्भव होती है वह विवाह से पहले और विवाह के बाद भी प्रेम सम्बन्ध मैं किसी भी

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

प्रकार की यौन सम्बन्धी छूट नही चाहती थी। किन्तु उसकी समस्या का रूप उग्र नही होता है वैसा ही सदा बना रहता है ओरो की स्त्रियों की तरह उतावली नहीं होती है उसे तो बस थोड़े में ही बहुत सन्तोष मिल जाता है। क्यो कि वह एक विवेकशील नारी है। और शान्त प्रिय स्वभाव की है यह स्वयं युवती की समस्या है जो अपनी समस्या का समाधान स्वयं ढूंढ लेती है।

वन कन्या की समस्याऐ प्रमुख रूप से तो शिक्षा प्रेम और विवाह की समस्या के अन्तर्गत ही मानी और जानी गई है। शिक्षित कन्या की समस्याऐ आशिक्षिता कन्या की समस्याओ से बहुत भिन्न नही है। शिक्षा व अशिक्षा के बीच उसका पूर्ण संघर्ष जारी रहा था। स्कूल की शिक्षा और व्यवहारिक की शिक्षा के अनुभवो से ही प्राप्त होती है। गांवो में स्कूलो की समय स्थापना की चर्चा तो अवश्य मिलती है परन्तु शिक्षा प्राप्ती की कोई समस्या के रूप में नही दिखाई देती है। नागर के उपन्यासों में पात्रो मैं भी शिक्षा के प्रति समस्या के रूप में चित्रित नही किया गया है कस्बो और छोटे शहरो में यह बात नही थी। लड़कियों को पढ़ाना खतरा मोल लेना था। यहां तक कि प्रेमचन्द्र भी अपनी पुत्री कमला को नही पढाना चाहते है थे। न वे मदर से मे भी नहीं भेजते थे। वे इस का काफी विरोध करते थे। उनकी धारणा थी कि पढ लिख कर लड़की तितली बन जाती है। विवाह से पूर्व लड़का लड़की को देखे या लड़की लड़का को देखे, इस का विरोध भी खूब किया। इसका तात्पर्य यह नही है कि प्रेमचन्द्र कन्या शिक्षा के विरोध में नहीं थे। वे नारी की अधोगति से त्रस्त थे अत्यधिक होकर दुखी थे

## संदर्भ सूची (References)


1. वाल्मीकि रामायण – बालकाण्ड, अरण्यकाण्ड
2. वेदव्यास – महाभारत
3. चिपको आंदोलन – पर्यावरण और समाज (विजय जार्डन, 1993)
4. "Nari aur Paryavaran" – डॉ. अर्चना मिश्रा, पर्यावरण समीक्षा, 2012
5. “Women and Forests in India” – Vandana Shiva, 1991